

विश्वास



पुनीत कुमार*



सुरेन्द्र तिवारी**

विश्वास एक ऐसा तत्व है जो हर युग, हर समाज और हर धर्म की नींव में गहराई से जुड़ा हुआ है। भारतीय पौराणिक कथाओं में विश्वास के महत्व को समझने के लिए हमें न केवल भगवद्गीता, रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथों की कहानियों का अध्ययन करना चाहिए, बल्कि यह भी देखना चाहिए कि कैसे विश्वास ने उन महान चरित्रों और घटनाओं को आकार दिया, जिन्होंने हमारे समाज के आदर्शों को निर्धारित किया।

विश्वास का महत्व : भगवद्गीता से प्रेरणा

भगवद्गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को उपदेश देते हुए कहते हैं कि-

*श्रद्धावान्मभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परं शान्तिमचिरेणाधिगच्छति॥*

(भगवद्गीता 4.39)

इस श्लोक का अर्थ है कि श्रद्धावान् और इंद्रियों को संयम में रखने वाला व्यक्ति ही ज्ञान प्राप्त करता है, और जब ज्ञान प्राप्त हो जाता है तो वह शीघ्र ही परम शांति को प्राप्त कर लेता है। यह श्लोक स्पष्ट करता है कि विश्वास (श्रद्धा) केवल बाहरी अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आत्मज्ञान और आंतरिक शांति की कुंजी है। अर्जुन के प्रति श्रीकृष्ण का विश्वास ही उन्हें इस महान उपदेश को देने के लिए प्रेरित करता है, जो आज भी मानवता को दिशा दिखाता है।

सतयुग से कलियुग तक : विश्वास का सफर

प्रत्येक युग में विश्वास की महत्ता और उसका मान्यता अलग-अलग थे, और इसका मूल अधिकार धार्मिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य से निर्धारित होता था। निम्नलिखित कुछ उदाहरण बताते हैं कि प्रत्येक युग में विश्वास की मान्यता और महत्व में कैसे परिवर्तन हुआ-

* एसोसिएट प्रोफेसर
इंस्टीच्यूट ऑफ टेक्नॉलोजी एंड साइंस (आई.टी.एस.), मोहन नगर

** एसोसिएट प्रोफेसर
इंस्टीच्यूट ऑफ टेक्नॉलोजी एंड साइंस (आई.टी.एस.), मोहन नगर

सतयुग : सत्य और विश्वास का युग

सतयुग : सतयुग में विश्वास को अत्यंत महत्व दिया जाता था। लोग एक दूसरे में पूरी श्रद्धा और विश्वास रखते थे। वे धार्मिकता, सच्चाई और साधना में विश्वास करते थे।

सतयुग को सत्य और धार्मिकता का युग माना जाता है। इस युग में विश्वास का अर्थ था, सच्चाई, ईमानदारी और समर्पण। देवता और मानव एकदूसरे के प्रति पूर्ण विश्वास रखते थे, और यह विश्वास ही उन्हें सच्चाई और धर्म के मार्ग पर स्थिर बनाए रखता था। प्रह्लाद का अपने पिता हिरण्यकशिपु के अत्याचारों के बावजूद भगवान विष्णु में अडिग विश्वास, सतयुग की इस मान्यता का जीवंत उदाहरण है। भगवान् ने प्रह्लाद की श्रद्धा और विश्वास के सम्मान में नरसिंह रूप में प्रकट होकर हिरण्यकशिपु का वध किया।

त्रेतायुग : रामायण में विश्वास की धारा

त्रेतायुग में भी विश्वास का महत्व था, लेकिन इसमें धर्म और यज्ञ की प्रमुखता थी। राजा और राजकुमारों के बीच विश्वास एक महत्वपूर्ण सामाजिक और राजनीतिक मानदंड था। त्रेतायुग में रामायण के पात्रों के बीच विश्वास का संबंध अद्वितीय था। राम और सीता का प्रेम और एकदूसरे पर अडिग विश्वास इस युग का प्रतीक है। जब राम वनवास के लिए गए, तो सीता ने बिना किसी संदेह के उनके साथ जाने का निर्णय लिया। यह उनका विश्वास था जो उन्हें राम के साथ कठिनाइयों को सहने के लिए प्रेरित करता था। सीता का राम के प्रति अटूट विश्वास उन्हें हर कठिनाई में स्थिर बनाए रखता है। जब रावण ने सीता का अपहरण किया, तो उन्होंने राम के प्रति अपने विश्वास को कभी नहीं डगमगाने दिया।



राम, सीता और लक्ष्मण वन की ओर
रेखाचित्र : प्रियांशी



राम और सीता
चित्र : चारु महाजन

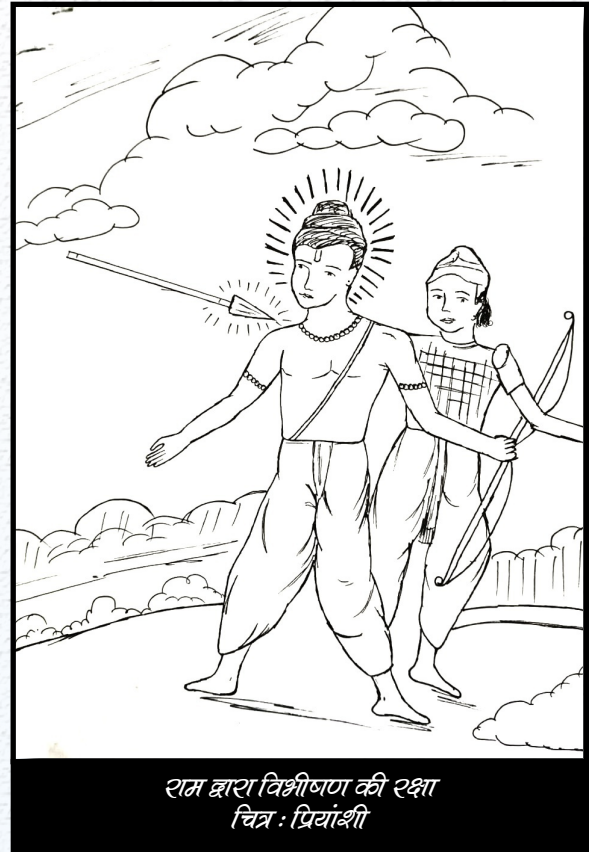


दुर्योधन और कर्ण
रेखाचित्र : जैरामन

हनुमान का भगवान राम के प्रति अडिग विश्वास और उनकी सेवा में संपूर्ण समर्पण उन्हें अद्वितीय शक्ति और साहस प्रदान करता है। हनुमान ने सीता को ढूँढने और राम का संदेश पहुंचाने के लिए अपनी पूरी शक्ति का उपयोग किया। यह उनका राम पर अडिग विश्वास था, जिसने उन्हें लंका में प्रवेश करने और सीता माता को खोजने के असंभव कार्य को पूरा करने में मदद की।



राम और लक्ष्मण की हनुमान जी से भेंट
चित्र : सुनिधि गुप्ता



राम द्वारा विभीषण की रक्षा
चित्र : प्रियांशी

राम और लक्ष्मण के बीच एक अद्वितीय बंधुत्व था जिसमें विश्वास, स्नेह और समर्थन की गहरी भावना थी। लक्ष्मण ने राम के प्रति न केवल अपनी निष्ठा दिखाई, बल्कि अपने प्राणों की आहुति देने तक का संकल्प लिया। राम का लक्ष्मण पर अटूट विश्वास उन्हें हर कठिन परिस्थिति में साथ बनाए रखता है। यही विश्वास रामायण के अन्य पात्रों के बीच भी दिखाई देता है, जैसे कि भरत की राम के प्रति निष्ठा, जिन्होंने राम के लिए अयोध्या का सिंहासन त्याग दिया।

राम का भी अपने अनुचरों पर विश्वास अद्वितीय था। जब विभीषण ने रावण को छोड़कर राम का साथ देने का निर्णय लिया, तो राम ने बिना किसी संदेह के उन्हें अपनाया। यह राम का विश्वास ही था, जिसने विभीषण को लंका का राजा बनने का अवसर प्रदान किया और उन्हें सम्मानित किया।

द्वापरयुग : महाभारत में विश्वास और अविश्वास का संघर्ष

द्वापरयुग में विश्वास की मान्यता कम होती गई, और धर्म-अधर्म के संघर्ष के कारण लोगों के बीच आपसी विश्वास घटने लगा। अधर्म की प्रबलता से लोगों में अनुशासन और निष्ठा कम होने लगी।

द्वापरयुग में महाभारत की कहानियों में विश्वास और अविश्वास का गहरा संघर्ष देखने को मिलता है। पांडवों और कौरवों के बीच यह महायुद्ध केवल भूमि और अधिकारों का संघर्ष नहीं था, बल्कि यह विश्वास और धर्म के सिद्धांतों की भी परीक्षा थी।

युधिष्ठिर, जिन्हें धर्मराज कहा जाता था, ने हमेशा सत्य और धर्म के मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। उनका धर्म और सत्य के प्रति अडिग विश्वास ही उन्हें महाभारत के कठिन संघर्षों में स्थिर बनाए रखता है।



यक्ष और युधिष्ठिर
चित्र : सोनाली कुमारी



धृतराष्ट्र और दुर्योधन
चित्र : मान्या

दूसरी ओर, कर्ण का दुर्योधन के प्रति निष्ठा और विश्वास भी एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। कर्ण का विश्वास, उसकी मित्रता और निष्ठा की परीक्षा महाभारत के केंद्र में है। कर्ण ने अपने मित्र दुर्योधन के साथ अपने संबंधों को हमेशा प्राथमिकता दी, भले ही इसके लिए उन्हें अपने स्वयं के परिवार और धर्म का त्याग करना पड़ा।

धृतराष्ट्र का अविश्वास और अपने पुत्र दुर्योधन के प्रति मोह उन्हें अपने कर्तव्यों से विमुख कर देता है। यह उनका अविश्वास और अधर्म का समर्थन ही था, जिसने पूरे कौरव परिवार को विनाश की ओर धकेल दिया।

कृष्ण का अर्जुन के प्रति विश्वास और अर्जुन का कृष्ण के प्रति समर्पण, महाभारत की कथा का महत्वपूर्ण अंग है। कृष्ण ने अर्जुन को न केवल धर्म और कर्म के सिद्धांतों को समझाया, बल्कि उसे जीवन के हर मोड़ पर सही मार्गदर्शन भी प्रदान किया। अर्जुन का कृष्ण के प्रति अटूट विश्वास ही उसे युद्ध के मैदान में अपने कर्तव्यों का पालन करने के लिए प्रेरित करता है।

कलियुग : विश्वास का संकट

कलियुग में विश्वास की मान्यता एवं महत्व और भी कम हो गया है। यह युग अधर्म, अनियमितता और असंतोष का युग है, जिसके कारण लोगों के बीच विश्वास की कमी आई है। अधर्म, अनियमितता और असंतोष इस युग की विशेषताएँ बन गई हैं। समाज में अविश्वास का बढ़ता प्रभाव, न केवल व्यक्तिगत रिश्तों में, बल्कि सामाजिक और व्यावसायिक संबंधों में भी देखा जा सकता है। आज के समय में, विश्वास का संकट मानवता के सामने एक बड़ी चुनौती बन गया है।



कृष्ण द्वारा गीता का ज्ञान
चित्र : सुनिधि गुप्ता

कई बार लोग धोखाधड़ी और बेईमानी का शिकार हो जाते हैं, जिससे उनके बीच विश्वास की कमी उत्पन्न हो जाती है। कलियुग के इस दौर में, जब समाज में नैतिकता और धर्म का अभाव है, हमें विश्वास को पुनः स्थापित करने के लिए प्रयास करने

की आवश्यकता है। जैसे प्राचीन युगों में विश्वास ने समाज को स्थायित्व और शांति प्रदान की, वैसे ही आज भी विश्वास का पुनः स्थापन समाज को नई दिशा और ऊर्जा प्रदान कर सकता है।

इन युगों के अनुसार, विश्वास की प्रतिष्ठा और मान्यता में परिवर्तन हुआ है, जो समाज और धार्मिकता के विकास के साथ हुआ है। इसके बावजूद, प्रत्येक युग में विश्वास एक महत्वपूर्ण आधार रहा है, जो समाज को समृद्ध और संतुलित रखने में मदद करता है।

आधुनिक समाज में विश्वास की भूमिका

आज के समय में, जब समाज में अविश्वास और नैतिकता का अभाव बढ़ता जा रहा है, विश्वास का महत्व और भी बढ़ गया है। विश्वास न केवल व्यक्तिगत संबंधों को मजबूत बनाता है, बल्कि यह समाज में समरसता और सहयोग की भावना को भी बढ़ावा देता है।

विश्वास एक ऐसा मूल्य है जो हर संबंध की नींव होती है। यह उस अंतर्निहित बंधन की प्राकृतिकता को दर्शाता है जिससे हमारी समाजिक, आर्थिक, और व्यक्तिगत जीवन की बुनियाद बनती है। विश्वास के बिना हर रिश्ता अधूरा हो जाता है। यह उस प्रेम की भावना को जीवंत रखता है जो हमें दूसरों में भरोसा करने पर प्रोत्साहित करती है। परिवार में विश्वास एक माँ की गोद जैसा होता है जो हर सदस्य को सुरक्षा और प्राथमिकता देता है। यह विश्वास ही है जो परिवार के सदस्यों को एकजुट रखता है और उन्हें कठिनाइयों का सामना करने में सक्षम बनाता है।

व्यवसाय में विश्वास नैतिकता का प्रमुख स्तंभ है। यह विश्वास ही है जो व्यावसायिक संबंधों को निष्ठावान और स्थिर बनाए रखता है। बिना विश्वास के व्यापार में पारदर्शिता और निष्ठा की कमी हो सकती है, जिससे आर्थिक प्रणाली पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

विश्वास को पुनः स्थापित करने की आवश्यकता

आज के समाज में विश्वास की कमी एक महत्वपूर्ण समस्या बन गई है। लोगों के बीच कमजोर विश्वास ने न केवल व्यक्तिगत रिश्तों को अस्थिर किया है, बल्कि समाज के संरचनात्मक विकास को भी प्रतिबंधित कर दिया है। इस दृष्टिकोण से हमें समाज में विश्वास को पुनः स्थापित करने के लिए प्रयास करने की आवश्यकता है।

विश्वास को बढ़ावा देने के लिए हमें पहले खुद पर भी विश्वास करना सीखना होगा। जब हम खुद में विश्वास रखेंगे तभी हम दूसरों में विश्वास कर सकेंगे। संवाद, समझौता, और सहानुभूति विश्वास के महत्वपूर्ण अंग हैं। हमें दूसरों के दृष्टिकोण और भावनाओं को समझने का प्रयास करना चाहिए ताकि हम उनके साथ एक बुनियादी संबंध को समझ पाएं।

समाज में विश्वास को बढ़ावा देने के लिए हमें न्याय, समरसता, और समय-समय पर प्रतिक्रिया करने की आवश्यकता होती है। एक सशक्त और स्थिर समाज के लिए विश्वास को सभी परिस्थितियों में बनाए रखना आवश्यक है।

निष्कर्ष

विश्वास समाज के लिए एक मूल्यवान धरोहर है, जो हमें सभी संबंधों में सुरक्षित और प्रतिस्थापित रखता है। हमारे जीवन में विश्वास ही वह निर्धारण है जो हमें उत्कृष्टता की दिशा में अग्रसर करता है और हमारे रिश्तों को मजबूत बनाता है। चाहे वह रामायण के पात्र हों, महाभारत के योद्धा हों, या हमारे आधुनिक समाज के नागरिक, विश्वास का महत्व सदा अडिग और अमूल्य रहेगा।

विश्वास के बिना जीवन एक रंजित की तरह हो सकता है, जहाँ हर कदम पर संदेह और असुरक्षा का सामना करना पड़ता है। लेकिन जब हम विश्वास की शक्ति को पहचानते हैं, तो यह हमें न केवल व्यक्तिगत शांति और स्थायित्व प्रदान करता है, बल्कि समाज में भी समरसता और सहयोग की भावना को पुनर्जीवित करता है। इसलिए, हमें अपने जीवन और समाज में विश्वास को प्राथमिकता देनी चाहिए, ताकि हम एक अधिक न्यायपूर्ण, स्थिर, और समृद्ध समाज का निर्माण कर सकें।